प्यार के माध्यम से या भक्ति द्वारा आध्यात्मिक अभ्यास के चार आवश्यक अंग हैं।

1. सतत 2. निष्काम 3. अनन्य 4. ईश्वर-संत समकक्ष (यदि आपको पहले निर्दिष्ट मानदंड के अनुसार वास्तविक संत मिला है तो।)

प्यार नॉन-स्टॉप होना चाहिए। एक पल के लिए भी खंडित नहीं होना चाहिए। जहां भी आप हैं, आप जो भी कर रहे हैं, आप जिस भी स्थिति में हैं, प्रेम का प्रवाह नही रूकना चाहिए। मन ही बंधन (सांसारिक पीड़ा) और स्वतंत्रता(शाश्वत आनंद) का एकमात्र कारण है। बाहरी स्थिति कोई फर्क नहीं पड़ता। उदाहरण के लिए कि आपने स्नान किया है या नहीं, भले ही आपके पास कुछ शारीरिक बीमारी या शारीरिक अशुद्धता है, फिर भी आप को भगवान को याद करना हैं। भगवान की याद आपको अंदर (मन) और बाहर (शरीर) से शुद्ध करती है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

प्रारंभिक चरणों में, नॉन-स्टॉप भक्ति करना बहुत मुश्किल है। कारण ये है कि हम में भगवान के लिए प्यार की कमी है और ऐसा इसलिए है क्योंकि भगवान के गुणों पर कोई विचार-विमर्श नहीं है। आप भौतिक व्यक्ति के लिए प्यार कैसे विकसित करते हैं? सौंदर्य, नरमता, मीठी बात या किसी भी अन्य कौशल के गुणों के कारण। भगवान में हर गुणवत्ता है जिसे आप ढूंढ रहे हैं। वह इस धरती पर किसी भी व्यक्ति की सुंदरता से अनंत गुना सुंदर है। आप अपनी कल्पना के अनुसार किसी भी रूप में भगवान की कल्पना कर सकते हैं। संसारी व्यक्ति हमेशा कमीयों से भरा होता है जबकि भगवान किसी भी

कमियों से रहित होता है।

इसके अलावा भगवान बेहद दयालु, कृपालु है और आपसे बहुत प्यार करता हैं अन्यथा भगवान इस दुनिया को बनाता ही नहीं। वह आपके लिए कितनी सारी चीजें करता है ये आप नही जानते। वह आपको उसकी संतान के रूप में मानता है। ये शरीर जो आपके पास है वो उसका सृजन है। माता-पिता ने क्या किया? उन्होंने सिर्फ सेक्स का आनंद लिया। मां को यह भी पता नहीं है कि गर्भ के अंदर क्या हो रहा है। मैं ये नहीं कह रहा हूं कि आप अपने माता-पिता का अनादर करें। उन्होंने पाल पोस कर बडा किया है इसलिए माता पिता का एहसान मानना चाहिए। उनके प्रति अपना कर्तव्य निभाना चाहिए। लेकिन तथ्य को महसूस करना भी जरूरी है। तभी सही निर्णय होगा। भगवान आपका असली पिता और माता है क्योंकि वह आपको शरीर सहित सबकुछ देता है।

www.shreeradha.com
shreeradha.eschool@gmail.com
WhatsApp 94232 09132

सम्मान और प्रेम पूरी तरह से अलग हैं। जैसे ही कोई भी काम करने वाला व्यक्ति अपने मालिक का सम्मान करता है लेकिन अपने परिवार से प्यार करता है, वैसे ही आप भी सबको सम्मान दें लेकिन प्यार केवल भगवान से करें।